Swami Vivekananda Advanced Journal for Research and Studies
Online Copy of Document Available on: www.svajrs.com

ISSN:2584-105X Pg. 61-63

प्राचीन भारत में स्त्रियों की सामाजिक स्थिति

सौरभ चौधरी
शोध-छात्र
प्राचीन इतिहास पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, उ0प्र0

Accepted: 22/10/2025
Published: 28/10/2025 *DOI: http://doi.org/10.5281/zenodo.17487879*

सारांश

किसी भी देश के सांस्कृतिक विकास एवं उन्नति का उत्तरदायित्व उस देश की स्त्रियों पर निर्भर होता है। कोई भी समाज, कोई भी देश और राष्ट्र स्त्रियों को सुदृढ़ किये बिना आगे नहीं बढ़ सकता है। भारत की प्राचीन संस्कृति मंे स्त्रियों के सम्बन्ध में दृष्टिकोण सकारात्मक व नकारात्मक रहा है कभी स्त्रियों को देवी मानकर पूजनीया बना दिया गया तो कभी उसे निम्नतम श्रेणी में रखकर राजप्रसादों, घर की चारदिवारी में कैद करके उसकी स्वतंत्रता एवं गरिमा की अवहेलना कि गयी। प्राचीन काल से ही भारतीय समाज में उन्हें हेय दृष्टि से देखा गया तथा पुरूषों से कमतर माना गया तथा पुरूषों के सदृश अधिकार पाने के सर्वथा अयोग्य माना गया। भारतीय संस्कृति हमेशा से अध्यात्म प्रधान रही है अस्तु स्त्रियों को धार्मिक क्रियाकलापों में प्रमुख स्थान दिया गया, परन्तु सामाजिक एवं राजनीतिक विषयों में उसकी भूमिका नगण्य कर दी गयी फलतः स्त्रियाँ प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक अपने अधिकारों के लिए संघर्षरत हैं।

शब्द कुंजी : *स्त्रियाँ प्राचीन काल; सामाजिक स्थिति; संस्कृति देवी; उन्नति; पुरूष इत्यादि।*

भारतीय इतिहास की सबसे प्राचीन सिन्धु घाटी सभ्यता से जो साक्ष्य प्राप्त होते हैं उससे ज्ञात होता है कि सैंधव समाज में स्त्रियों की स्थिति अत्यन्त सम्मानजनक थी उनको मातृशक्ति के प्रतीक के रूप में देखा जाता था सैंधव स्थलों से मिट्टी की बनी हुई नारी मूर्तियाँ मिली हैं। हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो से भारी मात्रा में मातृदेवी की मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं।1 मृण्मूर्तियों के अतिरिक्त कुछ मुद्राओं के अध्ययन से भी पृथ्वी या मातृदेवी की उपासना पर प्रकाश पड़ता है। हड़प्पा से प्राप्त एक अभिलेख युक्त मुद्रा पर दाहिनी ओर स्त्री सिर के बल खड़ी है। उसकी योनि से एक पौधा प्रस्फुटित होता दिखलाया गया है यह आकृति पृथ्वी देवी की हो सकती है जो सम्पूर्ण वनस्पती जगत की उत्पत्ति का आधार है।2 अतः हम कह सकते है कि सैंधव समाज में स्त्रियों की स्थिति अच्छी थी उन्हें उर्वरता की देवी माना जाता था, एवं सृष्टि के निर्माणकर्ता के तौर पर उनकी पूजा की जाती थी। युग परिवर्तन के साथ ही स्त्रियों की स्थिति में गिरावट देखने को मिलता है। आर्यों के प्रारम्भिक समाज में स्त्रियों की स्थिति अच्छी थी वे बिना किसी प्रतिबंध के सामाजिक एवं राजनीतिक गतिविधियों में प्रतिभाग कर सकती थी। वस्तुतः वैदिक युग में स्त्री जितनी स्वतंत्र और मुक्त थी, उतनी परवर्ती काल में किसी भी युग में नहीं थी। उसके अधिकार किसी भी प्रकार से पुरूषों से कम नहीं थे। शिक्षा, ज्ञान, यज्ञ आदि में वह स्वच्छन्तापूर्वक सम्मिलित होती थी उस युग में अनेक विदुषी स्त्रियांँ थीं] जिन्होंने ऋग्वेद और अन्य अनेक ऋचाओं का प्रणयन किया था। लोपामुद्रा, विश्ववारा, सिक्ता, घोषा आदि ऐसी स्त्रियांँ थी जोकि शिक्षा, ज्ञान और विद्वता के क्षेत्र में अग्रणी थीं।3 सामाजिक और धार्मिक उत्सवों] समारोहों में वे अलंकृत होकर बिना किसी प्रतिबन्ध के उन्मुक्त होकर हिस्सा लेती थी।4 पुरूषों के साथ वे यज्ञ में सम्मिलित होकर कार्यविधि संचालित करती थी। बिना स्त्रियों के सहयोग के यज्ञ पूरा नहीं माना जाता था, वे यज्ञ की अधिकारिणी थी।5 अकेला पुरूष यज्ञ के लिए अयोग्य था।6

उत्तर वैदिक काल से ही स्त्रियों की दशा अवनति की ओर अग्रसर होने लगी। उसके सामाजिक और धार्मिक अधिकार तो अवश्य बने रहे किन्तु उसके राजनीतिक अधिकारों का दमन होता गया ऋग्वैदिक काल में जहाँ स्त्रियों को सभा व समिति में भाग लेने का अधिकार था वहीं उत्तर वैदिक काल में सभा व समिति में स्त्रियों के प्रवेश को लगभग निषेध कर दिया गया। केवल पुरूष को ही सभा में जाने की अनुमति थी, स्त्रियों की नहीं।7 उत्तर वैदिक काल में पुत्री को सभी दुःखों का मूल बताया गया8 एवं स्त्रियों को असत्य की मूरत के तौर पर शूद्र, श्वान और श्यामपक्षी की श्रेणी में रखा गया है।9

धर्मसूत्रों और स्मृतियों के काल तक आते-आते स्त्रियों की दशा पूर्णतः पतनोन्मुख हो गई। उसका स्वतंत्र अस्तित्व समाप्त हो गया तथा उसके शरीर पर उसके पति का स्वामित्व हो गया।10 पितृसत्तात्मक समाज होने के कारण उसकी स्थिति निरन्तर ह्ासोन्मुख होती गई। उसकी स्वतंत्रता और उन्मुक्तता पर अनेक प्रकार के अंकुश लगाये जाने लगे। मनु जैसे स्मृतिकारों ने स्त्री को कभी भी स्वतंत्र न रहने के लिए निर्देशित किया जब तक वह कन्या रहे उस पर पिता का संरक्षण रहे, जब विवाह हो जाय तब वह पति के संरक्षण में रहे और वृद्धावस्था में वह पुत्र के संरक्षण में रहे।11 विज्ञानेश्वर ने शंख का उद्धरण देकर टिप्पणी की है कि स्त्री घर से बिना चादर ओढ़े न निकले] शीघ्रतापूर्वक न चले, बनिये, सन्यासी, वृद्ध वैद्य के अतिरिक्त किसी पर पुरूष से बात न करे।12

बौद्ध युग में स्त्रियां प्रायः शिक्षित और विद्वान होती थीं। विद्या, धर्म और दर्शन के प्रति उनकी अगाध रूचि थी थेरीगाथा में कवयित्रियों में 32 आजीवन ब्रम्हचारिणी और 18 विवाहित भिक्षुणियांँ थीं। उनमें शुभा, सुमेधा और अनोपमा उच्च वंश की कन्याएं थी।13 संयुक्तनिकाय में महात्मा बुद्ध कहते है कि कभी-कभी पुत्री] पुत्र की अपेक्षा अधिक श्रेयस्कर है। बुद्ध काल में गणिकाओं के होने के भी प्रमाण मिलते हैं। ये ज्यादातर नगरों में रहती थी नगर की सर्वश्रेष्ठ, रमणीय, नयनाभिराम, सुरूपा, कमनीया, नृत्यगान गणिका को नगर की गणिका का पद मिलता था। आम्रपाली वैशाली की नगर वधु थी।[14] कुलमिलाकर हम कह सकते हैं कि बौद्ध काल में स्त्रियों की स्थिति मे सुधार हुआ संघ में स्त्रियों को प्रवेश की अनुमति देकर महात्मा बुद्ध ने एक महान कार्य किया। मौर्य काल में इस दृष्टि से और भी प्रगति हुई कौटिल्य ने कुछ अवस्थाओं में तलाक की अनुमति प्रदान की, विवाह के दौरान कन्या को मिलने वाला स्त्री धन का कुछ परिस्थितियों में उपयोग किया जा सकता था। नियार्कस ने स्वयंवर प्रथा का उल्लेख किया है। मेगस्थनीज के अनुसार इस युग में विवाह का लक्ष्य जीवन साथी प्राप्त करना, भोग एवं सन्तानोप्ति था, समाज में बहुविवाह प्रचलन में था, सामान्यतः लोग अपनी ही जाति में विवाह करते थे किन्तु समाज में अन्तर्जातीय विवाह का भी प्रचलन था। स्त्रियांँ राज्य सेवा में रहकर सरकार के लिए जासूसी करती थीं। इस काल में गणिकाएंँ राजमहल में सुरक्षा के लिए तैनात की जाती थीं।15 मेगस्थनीज के विवरण से ज्ञात होता है कि सम्राट के आखेट पर जाने पर सैकड़ों स्त्रियांँ उसे घेरे रहती थीं। विशेष रूप से अपंग एवं विधवा स्त्रियों से सूत तैयार करने और कपड़ा बुनने का काम लिया जाता था।[16]

इसी प्रकार सतावाहन काल में यदि स्त्रियों की स्थिति देखी जाय तो हम देखते हैं कि सामाजिक जीवन में स्त्रियों का स्थान प्रमुख था वे अपने अधिकार में सम्पत्ति रखती थीं। शिलालेखों में उनके प्रचुर दान का उल्लेख मिलता है। हम देखते हैं कि वे बौद्ध धर्म की पूजा कर रहीं हैं, सभाओं में भाग ले रहीं है और अपने पतियों के साथ अतिथियों का स्वागत कर रहीं है।17 अतः कहा जा सकता है कि सातवाहन समाज में स्त्रियों की स्थिति अच्छी है। सातवाहन काल के शासकों ने अपने नाम के साथ अपनी माता के नाम का प्रयोग करके स्त्रियों के सम्मान में वृद्धि की। स्त्रियों के शासन विषयक सूचना हमें नानाघाट अभिलेख से प्राप्त होता है जिसमें शातकर्णी के साथ उसकी पत्नी नागनिका का शासन के संचालन में उसे पति को सहयोग देते हुए प्रदर्शित किया गया है।[18]

गुप्तकाल में समाज पितृसत्तात्मक था परिवार में पिता को सर्वाधिक अधिकार था। स्त्रियाँं सम्पत्ति की स्वामिनी थी

परन्तु स्वतंत्र जीवन निर्वाह नहीं कर सकती थी। पुरूषों को एक से अधिक विवाह करने की अनुमति थी, विधवाओं की स्थिति दयनीय थी इस काल में पर्दा प्रथा एवं सती प्रथा जैसी कुरीतियां, विद्यमान थीं। नारद तथा कात्यायन जैसे स्मृतिकारों ने कन्या को पिता की सम्पत्ति में अधिकार प्रदान किया।[19]

हर्षवर्धन के शासनकाल में स्त्रियों की स्थिति गुप्तकाल के समान बनी रही इस काल में भी समाज पितृसत्तात्मक था, समाज में अन्तर्जातीय विवाह प्रचलित थे, पुनर्विवाह नहीं होते थे। समाज के उच्च वर्ग में सती प्रथा व्याप्त थी हर्ष की माता यशोमती सती हुई थी। हर्षवर्धन की मृत्यु के पश्चात तथा दिल्ली सल्तनत की स्थापना के मध्य के काल को पूर्वमध्य काल के नाम से जाना जाता है। इस काल में स्त्रियों के अधिकारों को लेकर अनेक महत्वपूर्ण परिवर्तन दिखाई पड़ते हैं विदेशी आक्रमणों के कारण समाज में पर्दाप्रथा एवं जौहर प्रथा बढ़ी।

निष्कर्ष %

प्राचीन भारत के इतिहास में स्त्रियों की सामाजिक स्थिति सदैव एक समान नहीं थी सैंघव व वैदिक काल में स्त्रियों की स्थिति अच्छी थी तथा उन्हें अत्यधिक अधिकार प्राप्त थे जबकि उत्तरवैदिक काल से पुरूष का स्त्रियों के प्रति अविश्वास की भावना बढ़ती गई। उन्हें निम्न भाव से देखा जाने लगा। बौद्ध युग में भी स्त्रियो की स्थिति में बहुत थोड़े ही सकारात्मक परिवर्तन दिखाई पड़ते हैं। गुप्तकाल तक आते-आते हमे पर्दा प्रथा भी दिखाई पड़ने लगी। पूर्व मध्यकाल तक सभी कुप्रथायें जैसे सतीप्रथा] बाल विवाह] पर्दा प्रथा के साक्ष्य समाज में प्राप्त होने लगे। इन कुप्रथाओं का अन्त भारतीय पुनर्जागरण के बाद ही हुआ।

सन्दर्भ सूची

1. गौतम] पी0एल0] प्राचीन भारत] जैन प्रकाशन मन्दिर, जयपुर] 2005 पृ0सं0 72
2. थपल्याल] किरण कुमार] सिन्धु सभ्यता, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान] महात्मा गांधी मार्ग] लखनऊ] 2002] पृ0सं0 141
3. मिश्र] जयशंकर] प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास, बिहार हिन्दी गं्रथ अकादमी, पटना] 2013] पृ0सं0 365
4. बृहदराण्यक उपनिषद] 3-6
5. अथर्ववेद] 2-36-1
6. शतपथ ब्राण] 5-1-6-10
7. मैत्रायणी संहिता
8. एतरेय ब्राण
9. शथपथ ब्राण
10. शतपथ ब्राण, 4-1-2-13
11. मनुस्मृति
12. मिताक्षरा
13. हॉर्नर] विमेन अंडर प्रिमिटिव बुद्धिज्म] दूसरा अध्याय
14. पाण्डेय] आर0एन0] प्राचीन भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास] प्रयाग पुस्तक भवन] प्रयागराज] पृ0सं0 86
15. थापर] रोमिला] अशोक तथा मौर्य साम्राज्य का पतन पृ0सं0 71
16. अर्थशास्त्र] 2@28
17. शास्त्री] के0ए0 नीलकंठ] दक्षिण भारत का इतिहास] बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी पटना] 2014 पृ0सृ0 104
18. गोयल] श्रीराम] पूर्वाद्वत] पृ0सं0 421-22
19. श्रीवास्तव] नीरज] मध्यकालीन भारत] ओरियंट ब्लैकस्वॉन] 2018] पृ0सं0 15

Disclaimer/Publisher's Note: The views, findings, conclusions, and opinions expressed in articles published in this journal are exclusively those of the individual author(s) and contributor(s). The publisher and/or editorial team neither endorse nor necessarily share these viewpoints. The publisher and/or editors assume no responsibility or liability for any damage, harm, loss, or injury, whether personal or otherwise, that might occur from the use, interpretation, or reliance upon the information, methods, instructions, or products discussed in the journal's content.

****